नई कहानी के सन्दर्भ में शेखर जोशी : तुलनात्मक अध्ययन

प्रज्ञा परम,
शोध छात्रा–हिन्दी,
दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट,
आगरा

नई कहानी दौर में नई पीढ़ी के कहानीकारों ने अपनी रचनाओं का आधार आम जन जीवन के उन्ही पहलुओं को बनाया जो प्रेमचन्द के साहित्यिक जीवन का आधार रहे, परन्तु नवीन शिल्पगत शैली के साथ। नई पीढ़ी के कहानीकारों ने अपनी रचनाओं के मूल में अपने दौर के सामाजिक जीवन व आम जनमानस के आपसी अन्तर्सम्बन्धों के सूक्ष्म पहलुओं को मुख्य स्थान दिया और उन्हे समझने व परखने का प्रयास किया। प्रेमचन्द की पीढ़ी को आगे बढ़ाने वाले तथा स्वयं को प्रेमचन्द से जोड़ने वाले ये कहानीकार व्यक्तिवादी चिन्तन से थोडा अलग रहे। जैसे राजेन्द्र यादव जो मध्यवर्गीय आम जनजीवन से जुड़े थे या फिर वो जिनका लगाव पहाड़ी जीवन, ग्रामीण आचंलिक जनमानस की परिस्थितियों व छोटे–छोटे कस्बों के जीवन प्रसंगों से अत्यधिक रहा जैसे फणीश्वरनाथ रेणू मार्कण्डेय, शिव प्रसाद सिंह, अमरकान्त, शेखर जोशी, भीष्म साहनी आदि।

तो क्या प्रेमचन्द की परम्परा केवल ग्रामीण जन जीवन पर लिखना ही है यह पूरी तरह से ठीक नहीं लगता। प्रेमचन्द की परम्परा में ग्रामीण जन जीवन शामिल था परन्तु इसके अलावा इसका वेहद महत्वपूर्ण पहलू है अपने दौर के सामाजिक जीवन उसकी परस्थितियाँ राजनीतिक संरचना में मौजूद अन्तर्सम्बन्ध इन सभी पर बेहद सतर्क व पैनी दृष्टि रखना। यही वजह रही कि शिव प्रसाद सिंह ने स्वयं को प्रेमचन्द की परम्परा का लेखक नहीं माना और नई पीढ़ी के कहानीकार प्रेमचन्द के मूल्यों को आगे बढ़ाने में प्रयासरत रहे। कुछ कथाकार इसमें सफल रहे परन्तु जो सफल न रहे उन्हें अभारतीय संदर्भो का कहानीकार माना जाने लगा, इसका एक उदाहरण है निर्मल वर्मा जिनकी कहानियाँ आधुनिकता तथा पाश्चात्य संस्कृति से अधिक प्रभावित रही हैं।

नई कहानी दौर में एक बहस यह भी छिड़ी कि आखिर प्रेमचन्द परम्परा के कहानीकार सही मायनों में किन्हें माना जाये। फणीश्वरनाथ रेणू, मार्कण्डेय, अमरकान्त, भीष्म साहनी, शेखर जोशी मोहन राकेश, कमलेश्वर आदि इसी परम्परा के तो हैं परन्तु इन सभी के अलग–अलग आयाम है। एक दूसरी धारा और भी थी, जिसने प्रेमचन्द परम्परा लांघ जाने को चुनौती के रूप में स्वीकार किया और उसकी जगह यथार्थ को दी इनमें सबसे उल्लेखनीय साहित्यकार रहे धर्मवीर भारती। इन सभी की उपस्थिति के बावजूद यह कहा जा सकता है कि नई कहानी दौर की सबसे सशक्त धारा प्रेमचन्द से प्रेरणा पाना ही रही जिसमें फणीश्वर नाथ रेणू, भीष्म साहनी, अमरकान्त, मार्कण्डेय, शेखर जोशी, कमलेश्वर, मोहन राकेश सभी शामिल रहे हैं।

स्वतन्त्रता के बाद के दौर में प्रत्येक भारतीय के हृदय में सब कुछ बदल जाने की उम्मीद थी, अपेक्षायें बहुत बढ़ गईं थीं परन्तु सब कुछ रातों रात नहीं बदलता। स्वतन्त्रता के बाद गरीबी और शोषण खत्म नही हो रहा था तथा भ्रष्टाचार की शुरूआत हो गई थी। वर्णवाद

लगातार बढ़ता जा रहा रहा था, जिसने जनतन्त्र के विकास को रोक दिया। इससे एक तरह की कुंठा का जन्म हुआ, आम जनता की उम्मीदें पूरी नहीं हो पायीं जिसने उसे क्रोधित कर दिया। सभी सत्ताधारी लोग ऊँचाई पर बैठे इस बिखरते जनतन्त्र को देख रहे थे। विकसित होती वर्णवादी व्यवस्था स्वयं में जनतांत्रिक व्यवस्था विरोधी थी। जो लोग स्वतंत्रता के बाद जनतन्त्र के विकास की उम्मीद में थे उन सभी को धक्का लगा। इसी दौर में राजेन्द्र यादव जैसे साहित्यकारों ने अपनी कहानियों में इसी कुंठा का, जनता के इसी क्रोध का सशक्त चित्रण किया।

जनतन्त्र की इच्छा रखने वाले साहित्यकारों से मिलकर ही प्रेमचन्द की परम्परा का विकास हो सकेगा, इसमें राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर, मोहन राकेश को शामिल करना स्वाभाविक है। इसी दौर में एक साहित्यकार और आते हैं जो बड़ी खामोशी से अपने सहज स्वभाव के साथ इस धारा में शामिल रहे और वह हैं शेखर जोशी। हलवाहा, दाज्यू, समर्पण, कोसी का घटवार जैसी कहानियों के माध्यम से चर्चा में रहे शेखर जोशी ने अपनी कहानियों को एक बेहद संवेदनशील कथाकार के तौर पर जो ट्रीटमेंट दिया वह उन्हे अन्य कथाकारों से अलग खडा करता है। इनकी अन्य सशक्त कहानियाँ हैं बदबू, निर्णायक, गोपुली बुआ, बदबू, प्रश्नवाचक आकृतियाँ, सिनारियों, नौरंगी बीमार है, मेंटल आदि।

शेखर जोशी की कहानी 'प्रश्नवाचक आकृतियां' का आधर एक ऐसी सामाजिक बुराई रही, जिसने जवान पीढ़ी को कुण्ठाग्रस्त कर दिया अर्थात बेरोजगारी या बेकारी। इस कहानी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू है इसकी विचारधारा तथा व्यवहार जो ठीक अपने समय पर केन्द्रित है। 'प्रश्नवाचक आकृतियाँ' कहानी को शेखर जोशी के समकालीन कहानीकारों की कुछ कहानियों के साथ रखा जा सकता है जैसे अमरकान्त की कहानियाँ इण्टरव्यू, डिप्टी कलक्टरी, मार्कण्डेय की कहाँनियां साबुन, आखें, निर्मल वर्मा की कहानियाँ सितम्बर की एक शाम, पिक्चर पोस्टकार्ड आदि।

इनमें से अमरकान्त की कहानी 'डिप्टी कलक्टरी' पाठकों में ज्यादा चर्चित है। कहानी का जो परम्परागत संस्कार है इससे यह कहानी मेल खाती है तथा भावनात्मक धरातल पर आधारित है। परन्तु नई कहानी दौर का पाठक वर्ग भी नया विकसित हुआ है जो शेखर जोशी की कहानी 'प्रश्नवाचक आकृतियाँ' में मौजूद संवेदनाओ से स्वयं को अधिक जुड़ा हुआ पाता है।

'डिप्टी कलक्टरी' का नायक एक कमरे में चुपचाप रहता है। उसमें विरोध की भावना नहीं, परन्तु 'प्रश्नवाचक आकृतियाँ'' का पात्र इससे विपरीत विरोधी प्रवृत्ति का है। जिसका अपना व्यक्तित्व तथा आत्मसम्मान है। इनका नायक अपने व्यवहार से भी आधुनिक प्रकृति का है। रोजमर्रा की परेशानियों के होते हुये भी वह किसी अवसाद से या कुण्ठा से ग्रस्त नही। वह मानसिक रूप से इतना सशक्त है कि अपनी परिस्थितियों से अपने आत्म सम्मान के साथ मुकाबला कर सके। यह इन उद्धरणों से पता चलता है–

–''मैंने इन दिनों जो डाक्टर के आदेश पर सिगरेट और कॉफी छोड देने का बहाना बनाया है वह मात्र मेरी विवशता है, हर दूसरे के दम पर शौक पूरा करने में झिझक होती है।''[1]

इससे पता चलता है कि नायक पढाई के दबाव में तो है परन्तु अवसाद ग्रस्त नही कि अपने शौक खत्म कर दे परन्तु उसमे इतना आत्मसम्मान है कि वह अन्य के रूपयों पर अपने शौक पूरे नहीं करना चाहता।

मार्कण्डेय भी इसी दौर के साहित्यकारों में आते हैं यह अपने परिवेश के प्रति सदैव सजग व

सचेतन अवस्था में रहते हैं परन्तु इनकी कहानियों में कहीं न कहीं राजनैतिक भाव दिख ही जाता है फिर चाहे वह साकेतिक रूप में हो या सीधे तौर पर। 'प्रश्नवाचक आकृतियाँ' कहानी को मार्कण्डेय की कहानी 'साबुन' के साथ रख के देखें तो 'साबुन' कहानी 'प्रश्नवाचक आकृतियाँ' कहानी के सामने कमजोर पड जाती है हालांकि वैचारिक पृष्ठभूमि पर साबुन कहानी आगे बढ़ी हुई है। 'प्रश्नवाचक आकृतियाँ' का नायक का चरित्र उतना ही स्पष्ट है जितना 'साबुन' कहानी के नायक राजेश का है परन्तु वह राजेश की तरह स्वयं को बाह्य जगत की सच्चाई से अलग नहीं होने देता, कहानी के एक उदाहरण में देख सकते हैं।

–''पी.सी.एस. में रिटेन में आ जाने के बाद मां धीरे–धीरे स्वप्न बुनने लगी थीं''

''मन के साथ–साथ आज शरीर में भी विचित्र थकान भर गई है किसी एकान्त कोने में बैठकर एक कप चाय लेने का मन हो रहा है''[2]

यहाँ दिखता है कि कहानी का नायक एकाकीपन में है परन्तु अपनी अर्न्तमन की उलझनों के बावजूद वह वास्तविकता को नकारना नहीं चाहता। बाहरी दुनिया से जुडा रहता है, एकान्त में बैठकर एक कप चाय लेने का मन होना, इसी का प्रतीक है।

निर्मल वर्मा की कहानियों के पात्र एक अजीब रहस्मयी व्यक्तित्व को ओड़े हुये लगते हैं, उनकी कहानियाँ सितम्बर की एक शाम तथा पिक्चर पोस्टकॉर्ड को ऐसी ही कहानियों की श्रेणी में रखा जा सकता है। 'प्रश्नवाचक आकृतियाँ' को निर्मल वर्मा की कहानियों के साथ रखकर देखें तो 'प्रश्नवाचक आकृतियाँ' कहानी का नायक अधिक यथार्थ तथा अपने परिवेश के अधिक निकट मालूम होता हैं। इस कहानी का नायक बड़ों के प्रति सम्मान रखता है और अपने मूल्यों से भी जुड़ा रहता है। निम्न उदाहरण में देखिये–

''ऐसे व्यक्तियों से मेरा साक्षात्कार हो चुका है जिन्होंने मेरे सामान्य ज्ञान की परीक्षा लेने के लिये स्कूली बच्चों से पूछे जाने योग्य प्रश्न भी मुझसे पूछे हैं और उनकी उम्र या पिताजी के साथ उन बुजुर्गों के अच्छे सम्बन्धों के कारण विवश होकर मुझे बताना ही पड़ा है।''[3]

यहाँ नायक स्वयं से पूछे गये इन फिजूल के प्रश्नों का उत्तर देना जरूरी नहीं समझता परन्तु शिष्टाचारवश उसे ऐसा करना पड़ता है। यह स्वतंत्रता के बाद के भारत का दौर था जब जनता ने जनतंत्र को चलाने की जिम्मेदारी जिनको दी उनका स्वभाव सामन्तवाद के प्रति सहयोगात्मक रहा, इस राजनीतिक सामाजिक व्यवस्था से नई पीढ़ी के युवा क्रोधित दिखने लगे। ऐसे में शेखर जोशी की एक और कहानी निर्णायक सामने आयी। ये युवा पीढ़ी की कहानी थी, परिचयात्मक रूप से निर्णायक कहानी का एक उद्धरण–

'' रिटायरमेंट के बाद दस साल कहीं और चिपके रहने की योजनायें सस्ते दर पर मकानों के दो चार प्लाट लेकर भाव बढने पर ....। यह सब मैं इसलिये बता रहा हूँ कि एक सफल कार्यनिपुण कर्मचारी की हैसियत से मैं अपने भूतपूर्व बास का कितना विश्वास पात्र हो गया था''[4]

एक साथ भारतवर्ष के युवाओं, किसानों, आम मजदूर जीवन के लोग आदि ने मिलकर भारत की स्वतंत्रता का स्वप्न देखा परन्तु यह स्वप्न केवल अंग्रेजी सरकार से भारत की स्वतंत्रता का नहीं था बल्कि भारत में पनप रहे सामन्ती संरचना से स्वतंत्रता मिलने का था। भारत अंग्रेजों से तो स्वतंत्र हो गया परन्तु सामन्ती संरचना के अस्तित्व पर कोई आँच नहीं आई बल्कि जनतंत्र का दायित्व काफी कुछ राजनीतिकों व कारोबारियों आदि के हाथों में आ गया तथा सामन्तवादी सामाजिक व्यवस्था के प्रति भी ये सब सहयोगात्मक ही रहे। ऐसे दौर में

सामने आयी शेखर जोशी की कहानी 'निर्णायक' काफी उल्लेखनीय थी। इसमें उस दौर के युवा पीढ़ी के गुस्से और तिलमिलाहट को वैसा ही अभिव्यक्त किया जैसा उस समय मौजूद था।

शेखर जोशी द्वारा रचित ऐसी ही एक और कहानी है– 'नौरंगी बीमार है' जो उस दौर के माहौल और आम लोगों के मानसिक अवस्था को चित्रित करती है। यह कहानी समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार को चित्रित करती है, आम सोच है कि यह भ्रष्टाचार ऊपर से आता है परन्तु भ्रष्टाचार आम तबके के बीच निचले स्तर पर भी उपस्थित है। यह ईमानदारी दिखाना बेवखूफी समझा जाता है। नौरंगी बीमार है कहानी का नायक नौरंगी इसी ईमानदारी से अपना घर चला रहा है। परन्तु एक दिन उसके खाते में कुछ अधिक पैसे आ जाते हैं वह इन्हें वापस करे या अपने पास रख ले या फिर इसी ग्लानि में जिये कि वह भी औरों की तरह लालच में फंस गया।

–''शॉप के आदमियों को तो आप हमने अच्छा जानते होंगे, आप उनके मांई–बाप बनते हैं लेकिन इतना मुझे भी मालूम है कि नौरंगी मिस्त्री को पे–स्लिप से एक रुपया भी ज्यादा मिला होतो वह तत्काल लौटा जाता।''[5]

–''देखो घर जाकर हिसाब मिला लेना, तुम्हारा छहः सौ बनता था। शायद गलती से आठ सौ दे दिया हमने अगर इस बार भी दौ सौ ज्यादा चला गया हो तो तुम लौटा ही दोगे इसीलिये बुलाया था।''[6] भ्रष्टाचार समझने वाली बात है यह जरूरी नहीं कि पढ़ा–लिखा तबका या उच्च स्तर का व्यक्ति ही इसे समझ पायेगा सहज बुद्धि से भी इसे समझा व नकारा जा सकता है तथा नौरंगी इसी सहज बुद्धि का व्यक्ति है वह ईमानदार है तो यह दिखाने के लिये नहीं है न ही इससे कोई उसे पुरुस्कृत करेगा।

अपनी रचनाओं के माध्यम से शेखर जोशी कई राजनैतिक व सांस्कृतिक सवाल खडे करते हैं आखिर पूरी वास्तविकता तथा ईमानदारी से समाज को वह लौटाना जो समाज से लिया गया है, वह भी एक कहानीकार द्वारा बिना सवाल खडे किये, तो पूर्ण नहीं माना जा सकता।

शेखर जोशी एक सामाजिक जिम्मेदारी के साथ अपने साहित्यक जीवन में आगे बढ़ते हैं, जिम्मेदारी अपने लेखन के माध्यम से समाज को वह लौटाने की जो उन्होने समाज से उठया है जो है उसे वैसा ही अभिव्यक्त करने की और शेखर जोशी जिस सहजता से इस जिम्मेदारी को निभा जाते हैं वह हर कहानीकार के बस में नही, इसके लिये व्यक्तिगत रूप से स्वतन्त्र होने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ

1. प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर जोशी, प्रश्नवाचक आकृतियाँ ,द्वितीय संस्करण 2018 राजकमल प्रकाशन, दिल्ली–110032,पृष्ठ–109
2. प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर जोशी, प्रश्नवाचक आकृतियाँ ,द्वितीय संस्करण 2018 राजकमल प्रकाशन ,दिल्ली–110032,पृष्ठ–111
3. प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर जोशी, प्रश्नवाचक आकृतियाँ ,द्वितीय संस्करण 2018 राजकमल प्रकाशन ,दिल्ली–110032,पृष्ठ–108,
4. बच्चे का सपना– शेखर जोशी, निर्णायक,प्रथम संस्करण 2004 सम्भावना प्रकाशन हापुड़–245101, पृष्ठ–64
5. दस प्रतिनिधि कहानियाँ ,शेखर जोशी, ''नौरंगी बीमार है' किताब घर, प्रकाशन, नई दिल्ली–110002,पृ0सं0 76
6. दस प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर जोशी, ''नौरंगी बीमार है' किताब घर, प्रकाशन, नई दिल्ली–110002,पृ0सं0 80,

Copyright © 2017, Pragya Param. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.